❍ 30 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बेफिक्र बादशाह बनकर रहे ?*

➢➢ *रूहानी नशे क अनुभव किया ?*

➢➢ *ब्राह्मण जीवन की मौज में रहे ?*

➢➢ *पुरुषार्थ में तीव्रता का अनुभव किया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सारा दिन हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव को धारण करने का विशेष अटेन्शन रख अशुभ भाव को शुभ भाव में, *अशुभ भावना को शुभ भावना में परिवर्तन कर खुशनुमा स्थिति में रहना है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं सहजयोगी श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सहजयोगी, राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? *सहजयोगी अर्थात् स्वत: योगी। योग लगाने से योग लगे नहीं, तो योगी के बजाए वियोगी बन जाएं इसको सहजयोगी नहीं कहेंगे। सहजयोगी जीवन है। तो जीवन सदा होती है। योगी जीवन अर्थात् सदा के योगी, दो घण्टे चार घण्टे योग लगाने वाले को योगी जीवन नहीं कहेंगे।* जब है ही एक बाप दूसरा न कोई, तो एक ही याद आएगा ना?

〰✧ *एक की याद में रहना-यही सहजयोगी जीवन है। सदा के योगी अर्थात् योगी जीवन वाले। दूसरे जो योग लगाते हैं, वह जब योग लगाते हैं तब लगता है और ब्राह्मण आत्माएं सदा ही योग में रहती हैं क्योंकि जीवन बना ली है। चलते-फिरते, खाते-पीते योगी। है ही बाप और मैं।* अगर दूसरा कोई छिपा हुआ होगा तो वह याद आएगा। सदा योगी जीवन है अर्थात् निरन्तर योगी हैं। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि योग लगता नहीं, कैसे लगाएं?

〰✧ सिवाए बाप के जब कुछ है ही नहीं, तो लगाएं कैसे-यह क्वेश्चन ही नहीं। जब दूसरे तरफ बुद्धि जाती है तो योग टूटता है और जब टूटता है तो लगाने की मेहनत करनी पड़ती है। *लगाने की मेहनत करनी ही न पड़े, सेकण्ड में बाबा कहा और यादस्वरूप हो गए। ऐसे तो कहने की भी आवश्यकता नहीं, हैं ही-ऐसा अनुभव करना योगी जीवन है। तो सदा सहजयोगी आत्माएं हैं-इस अनुभूति से आगे बढ़ते चलो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ उन्हों के राज्य दरबार में तो खिटखट होती है। यहाँ तो खिटखट की बात ही नहीं है। आपोजिशन तो नहीं है ना। एक का ही कन्ट्रोल है। कभी-कभी अपने ही कर्मचारी आपोजिशन करने लग पडते हैं तो *राजयोगी अर्थात मास्टर सर्वशक्तिवान राजा आत्मा, एक भी कर्मेन्द्रिय धोखा नहीं दे सकती।*

〰✧ स्टॉप कहा तो स्टॉप ऑर्डर पर चलने वाले हैं ना। क्योंकि *भविष्य में लॉ और ऑर्डर पर चलने वाला राज्य है।* तो स्थापना यहाँ से होनी है ना। यहाँ ही 'आत्मा' राजा अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को लॉ और ऑर्डर पर चलाने वाली बने, तभी विश्व-महाराजन बन विश्व का राज्य लॉ और ऑर्डर पर चला सकती है।

〰✧ *पहले स्व राज्य लॉ और ऑर्डर पर हो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ परिवर्तन किस को कहा जाता है? प्रैक्टिकल लाइफ का सैम्पल किसको कहा जाता है? *जैसा समय, जैसा सरकमस्टांश वैसे स्वरूप बने- यह तो साधारण लोगों का भी होता है। लेकिन फ़रिश्ता अर्थात् जो पुराने या साधारण हाल-चाल से भी परे हो।* अभी आपकी टॉपिक है ना- समय की पुकार। तो अभी समय की पुकार आप विशेष महान आत्माओं के प्रति यही है कि अभी फ़रिश्ता अर्थात् अलौकिक जीवन स्वरूप में दिखाई दे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनना"*

➳ ➳ *मैं आत्मा सेण्टर में बाबा के कमरे में बैठ बाबा का आह्वान करती

हूँ... बाहरी सभी बातों से अपने मन को हटाकर एक बाबा में लगाने की कोशिश करती हूँ... धीरे-धीरे सभी कर्मेन्द्रियाँ शांत होती जा रही हैं... भटकता हुआ मन स्थिर होने लगा है... मैं आत्मा अपना बुद्धि योग एक बाबा से कनेक्ट करती हूँ...* इस शरीर को भी भूल एक बाबा की लगन में मगन होने लगती हूँ... बाबा मेरे सम्मुख आकर बैठ जाते हैं... मैं आत्मा गहन शांति की अनुभूति कर रही हूँ... मैं और मेरा बाबा बस और कोई भी नहीं...

❉ *कदम-कदम पर बाप की श्रीमत लेकर कर्म में आने की शिक्षा देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... मीठे से भाग्य ने जो ईश्वर पिता का साथ दिलवाया है... उस महान भाग्य को सदा का सुखो भरा सौभाग्य बना लो... *हर पल मीठे बाबा की श्रीमत का हाथ पकड़कर सुखी और निश्चिन्त हो जाओ... जिन विकारो ने हर कर्म को विकर्म बनाकर जीवन को गर्त बना डाला... श्रीमत के साये में उनसे हर पल सुरक्षित रहो..."*

➳ _ ➳ *प्यारे बाबा को विकारों का दान देकर माया के ग्रहण से मुक्त होकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा सच्चे ज्ञान को पाकर कर्मो की गुह्य गति जान गई हूँ...* आपकी श्रीमत पर चलकर जीवन पुण्य कर्मो से सजा रही हूँ... आपके मीठे साथ ने जीवन को फूलो सा महका दिया है... सुकर्मो से दामन सजता जा रहा है..."

❉ *हर कदम में मेरा साथ देकर मेरे भाग्य को श्रेष्ठ बनाते हुए खुदा दोस्त बन मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... श्रीमत ही वह सच्चा आधार है जो जीवन को खुशियो का पर्याय बनाता है... *स्वयं भगवान साथी बन हर कर्म में सलाह और साथ दे रहा है... तो इस महाभाग्य से रोम रोम सजा लो... सच्चे साथी की श्रीमत पर चलकर सुखदायी जीवन का भाग्य अपने नाम करालो..."*

➳ _ ➳ *सदा श्रेष्ठ संकल्प और कर्मों से अपने जीवन को सदा के लिए खुशहाल बनाते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा मनुष्य मत के पीछे लटककर कितनी दुखी हो गई थी... अब आपकी छत्रछाया में कितनी सखी कितनी बेफिक्र जिंदगी को पा रही हूँ... आपका साथ पाकर मै

आत्मा सतयुगी सुखो की मालकिन बनती जा रही हूँ...* मेरे जीवन की बागडोर को थाम आपने मुझे सच्चा सहारा दिया है..."

❉ *अपने मीठे वरदानों की बारिश कर मुझे अपने दिल तख़्त पर बिठाते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... यह वरदानी संगम सुकर्मों से दामन सजाने वाला खुबसूरत समय है कि मीठा बाबा बच्चों के सम्मुख है... *इसलिए हर कर्म को श्रीमत प्रमाण कर बाबा का दिल सदा का जीत लो... जब बाबा साथ है तो जीवन के पथ पर अकेले न चलो... सच्चे साथ का हाथ पकड़कर अनन्त खुशियो में उड़ जाओ..."*

➳ _ ➳ *ईश्वरीय प्रेम के साये में श्रेष्ठ कर्मों से व्यर्थ से मुक्त होकर समर्थ बनकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में कितनी खुशनुमा हो गई हूँ... *हर कदम पर श्रीमत के साथ अपने जीवन में खुशियो के फूल खिला रही हूँ... ईश्वर पिता के सच्चे साथ को पाकर, मै आत्मा हर कर्म को सुकर्म बनाती जा रही हूँ... और बेफिक्र बादशाह बनकर मुस्करा रही हूँ..."*

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बेफिक्र बादशाह बनकर रहना*"

➳ _ ➳ बापदादा की मत पर चल, अपने सभी बोझ बापदादा को सौंपते ही मैं अनुभव करती हूँ जैसे मैं बेफ़िक्र बादशाह बन, उमंग उत्साह के पंख लगा कर उड़ रही हूँ। *निश्चिन्त स्थिति का यह अनुभव मुझे उड़ती कला का अनुभव करवा रहा है। स्वयं को मैं एकदम हल्का अनुभव कर रही हूँ*। इस हल्की और निश्चिन्त स्थिति का भरपूर आनन्द लेते हुए मैं अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के बारे में विचार करती हूँ कि कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो मुझे

कदम - कदम पर श्रेष्ठ मत देकर मेरे जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले बाप और दादा मुझे मिले।

➳ _ ➳ कितनी भाग्यवान है वो ब्राह्मण आत्मायें जो इस समय भगवान को यथार्थ रीति पहचान कर, उनकी मत पर चल रही हैं। *जिस ब्रह्मा की मत को भक्ति में मशहूर माना जाता है वो ब्रह्मा बाप इस समय सम्मुख बैठ अपनी श्रेष्ठ मत हम बच्चों को दे रहें है और उनके तन में विराजमान स्वयं निराकार शिव भगवान भी साकार में आकर अपनी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत द्वारा कल्प - कल्प के लिए हम ब्राह्मण बच्चों का सर्वश्रेष्ठ भाग्य बना रहें हैं*।

➳ _ ➳ ऐसे बापदादा की मत पर चल अपना भाग्य बनाने वाली आत्मायें कोटो में कोई हैं। और उन कोई में भी कोई मैं हूँ वो सौभाग्यशाली आत्मा। *अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के बारे में चिंतन करती अब मैं उन पलों को याद करती हूँ जब किसी भी बात का मन पर बोझ हुआ तो बापदादा ने कैसे सामने आकर हमेशा ये अहसास दिलाया कि "बच्चे आप चिन्ता क्यो करते हो, मैं बैठा हूँ ना"*। और जब बापदादा की मत पर चल, सब कुछ उन्हें सौंप दिया तो वो बोझ जो मन को भारी कर रहा था, इतना हल्का हो गया जैसे कि था ही नही।

➳ _ ➳ ऐसे कदम - कदम पर अपने प्यारे बाप और दादा की मत पर सदा चलने और अपने सभी बोझ उन्हें देकर, सदा हल्के रहने की स्वयं से प्रतिज्ञा कर, *अपने भाग्यनिर्माता बापदादा से मिलने का मैं जैसे ही संकल्प करती हूँ अव्यक्त बापदादा की अव्यक्त आवाज मुझे सुनाई देती है जैसे बाबा कह रहे हैं "आओ बच्चे, मेरे पास आओ"।* यह अव्यक्त आवाज़ मुझे अव्यक्त स्थिति में स्थित कर, अव्यक्त फ़रिश्ता बनाये, बापदादा के अव्यक्त वतन की ओर लेकर चल पड़ती है।

➳ _ ➳ अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर को धारण कर मैं फ़रिश्ता साकार दुनिया को पार करता हूँ और उससे ऊपर अंतरिक्ष को पार करके लाइट के सूक्ष्म देहधारी फ़रिशतो की दुनिया मे पहुँच जाता हूँ। *अव्यक्त बापदादा के इस अव्यक्त वतन में मैं देख रहा हूँ अपने सामने अव्यक्त ब्रह्मा बाबा को उनके सम्पर्ण फ़रिशता स्वरुप में और उनकी भकटि में विराजमान शिव बाबा

को। इस कम्बाइन्ड स्वरूप में बापदादा के मस्तक से बहुत तेज लाइट और माइट निकल रही है जो चारों और फैल कर पूरे सूक्ष्म वतन को प्रकाशमय बना रही है*। सर्वशक्तियों के शक्तिशाली वायब्रेशन बापदादा से निकल कर चारों और फैल रहे हैं।

➳ _ ➳ इन शक्तिशाली वायब्रेशन का आकर्षण मुझे बापदादा के बिलुक़ल समीप ले कर जा रहा हैं। मैं फ़रिशता बापदादा के पास पहुँच कर, उनके सामने जाकर बैठ जाता हूँ। *बापदादा के मस्तक से आ रही शक्तियों की लाइट और माइट अब सीधी मुझ फ़रिश्ते पर पड़ रही है और मैं फ़रिशता सर्वशक्तियों से भरपूर हो रहा हूँ*। अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख कर बाबा मुझे हर बोझ से सदा मुक्त रहने का वरदान दे रहें हैं।

➳ _ ➳ बापदादा से वरदान लेकर और सर्वशक्तियो से सम्पन्न बन कर मैं फ़रिशता अब वापिस साकार लोक की ओर प्रस्थान करता हूँ। अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी तन के साथ मैं अपने साकारी तन में प्रवेश कर जाता हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर, अब मैं कदम - कदम पर बाप और दादा की मत पर चल कर, अपने सब बोझ बापदादा को दे कर, डबल लाइट स्थिति का अनुभव सदैव कर रही हूँ और इस डबल लाइट स्थिति में स्थित होकर, बापदादा को सदा अपने साथ अनुभव करते हुए, अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन और संगमयुग की मौजों का अब मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं विश्व के अंधकार को मिटाकर रोशनी देने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर ज्ञान सूर्य आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में लाइट रहती हूँ ।*
✺ *मैं मिलनसार आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना - *यह भी अपने को धोखा देना है। बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं।* दे देते हैं और दे भी रहे हैं। यह भी एक गुह्य राज है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, *दिल* के आधार पर नहीं लेकिन *दिमाग* के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का *प्रत्यक्ष फल* उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप *दाता* है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि *वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है।* लेकिन वह *मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते।*

➳ _ ➳ *बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता।* कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। *जमा क्या हुआ?* अच्छी सेवा की, अच्छी रिजल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है - *मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्रता। फाउन्डेशन पवित्रता है।* सेवा में भी फाउन्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। *भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता।*

✺ *"ड्रिल :- मंसा में, चाहे वाणी में, कर्म में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में शुद्धि का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा सूक्ष्मवतन में शिव बाबा के साथ एक रुहानी हाल में खडी हुई हूँ... जहाँ बहुत सुन्दर सुन्दर रूहानी रंगो से मूर्तियां रंगी हुई है एंव सफेद मोतियों से सजी हुई है मैने बाबा से पूछा *बाबा यह सुन्दर चित्र किसके है और किसने बनाये?* बाबा अपनी रूहानी नजरों से मुझ आत्मा को दिव्य साक्षात्कार करवा रहे कि *कैसे हम आत्मायें मोतियों से सजे हुए... हाथों में बासुरी लिये अपना दिव्य खेल खेल रहे है...* मुझ आत्मा को इन खूबसूरत चित्रों में खोया देख बाबा मुसकुरा कर कह रहे कि *यह रूहानी चित्र आप बच्चों के ही तो है जो बाबा दिन भर तैयार करता है इस उम्मीद के साथ कि एक दिन आप इन जैसे बन जाओगे...* मैं आत्मा अपने आँसूओं को चाहते हुए भी नही रोक पा रही और मन ही मन सोच रही कि *वाह मेरा भाग्य... वाह मेरे बाबा... कभी सपने में भी नही सोचा था कि तुम हमे मिल जाओगे और हमे विश्व की बादशाही दिलवाओगे... भला और किसी को क्या चाहिये, तुम मिल गए मानो सब मिल गया... शुक्रिया बाबा मुझे अपना बनाने के लिये...*

➳ _ ➳ कुछ देर बाद बाबा एक स्थान पर खड़े हो जाते हैं... और मैं आगे दौड़ जाती हूँ... जैसे ही मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो बाबा मुझसे दूर दिखाई देते हैं... मैं दौड़ते हुए बाबा के पास जा रही हूँ... बाबा ने कहा बच्ची पहले तुम सेवा करने के लिये तैयार हो जाओ... इतना कहकर बाबा सर्वप्रथम मुझे अपनी सतरंगी किरणों से नहलाकर सेवा करने के लिए तैयार कर रहे हैं... जैसे-जैसे ये

सतरंगी किरणें मुझपर गिरती है... वैसे -वैसे मैं अपने आपको शक्तिशाली महसूस करने लगती हूँ... उनकी किरणों से नहाकर मैं अपने आपको संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति स्वरूप आत्मा अनुभव कर रही हूँ... और *मैं अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली आत्मा समझने लगी हूँ कि मुझे स्वयं भगवान ने विश्व परिवर्तन के कार्य में अपना सहयोगी बनाया है...*

➳ _ ➳ *अब मैं सर्व खजानों से भरपूर होकर विश्व परिवरतन के खेल में आगे बढ़ती चली जा रही हूँ... और अपने व्यर्थ संकल्पों को पीछे छोड़ती जा रही हूँ...* मेरा मन भी बच्चे की भांति एकदम निष्कपट और कोमल हो गया है... मैं खेल में और भी उत्साहित हो रही हूँ... उछल-कूद रही हूँ... मेरे मन में किसी के लिए भी कोई बैर-भाव नहीं है... बाबा के साथ खेल खेलते हुए मेरी मंसा, वाचा, कर्मणा सभी शुद्ध होते जा रहे हैं... मेरी स्थिति और भी ऊँची होती जा रही है... ये अनुभव करते हुए मैं और आगे दौड़ने लगती हूँ... बाबा मुझे फिर दूर खड़े होकर निहारने लगते हैं... और अपनी पलकों के इशारे से मुझे अपने पास बुलाते हैं...

➳ _ ➳ फिर दौड़कर मैं बाबा के पास जाती हूँ... और *बाबा मुझे संगम युग के महत्व के बारे में बता रहे हैं...* बाबा कहते हैं- "खेल-खेल में प्राप्त कर लो संगमयुग के सर्व खजाने, कहीं समय ना बीत जाये फिर बनाने लगो तुम बहाने..." मैं उछलती-कूदती हुई उनकी सभी कही गई बातों को अपने अंदर समां लेती हूँ... उनकी दी हुई सभी अनमोल शिक्षायें जीवन में उतार लेती हूँ... और गुलाब की तरह खिल जाती हूँ... मेरे जीवन में मैं संपूर्ण पवित्रता की झलक देखने लगती हूँ...

➳ _ ➳ तभी बाबा को मेरी नज़रे ढूंढ़ती है... बाबा खेल में मुझसे छुप जाते है... और मैं चुपके से उन्हें ढूंढ लेती हूँ... और मेरा मन बाबा के साथ खेलते हुए ये अनुभव कर रहा है... *मानों मैंने सबकुछ पा लिया हो...* मेरा मन अति आनंदित हो रहा है तथा अतिइंद्रिय सुख की अनुभूति करने लगती हूँ... और इसी आनंद और उत्साह से मैं अपने पुरुषार्थ में जुट जाती हूँ...

➳ ➳ मेरा मन एकदम बच्चे की तरह निष्कपट और कोमल बन गया

है... मेरे संबंध-संपर्क में आने वाली सभी आत्माएं पावन बन रही हैं... *मैं मंसा, वाचा, कर्मणा, पवित्र बन चुकी हूँ...* मुझे सर्व खजाने के मालिक पन की अनुभूति हो रही है... अब मैं अन्य आत्माओं के प्रति शुभचिंतक बन उनको शुभ भावनाएं देती जा रही हूँ... मैं जितना-जितना सभी को शुभभावनाएँ देती जा रही हूँ... उतना ही मैं पुरुषार्थ में आगे बढ़ती जा रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔